17–3–67 ओमशांति प्रातःक्लास

अब तुम किसके सम्मुख बैठे हो?बापदादा के। बाबा भी कहना पड़े तो दादा भी कहना पड़े। बाप भी इस दादा के द्वारा ही तुम्हारे सम्मुख बैठे हैं।बाहर में तुम रहते हो तो वहां बाप को याद करना पड़ता है। पत्र लिखना होता है। यहां तुम सम्मुख हो। बात–चीत करते हो। किसके साथ?बापदादा के साथ। यह है ही उंच ते उंच दो अथॉरिटी। ब्रह्मा है साकारी और शिव है निराकारी। अब तुम जानते हो कि उंच तं उंच अथॉरिटी के साथ कैसे मिलना होता है?बेहद का बाप जिनको पतित–पावन बाप कह बुलाते हैं अब प्रैक्टिकल में ही तुम उनके सम्मुख बैठे हो।बाप बच्चों की पालना कर रहे हैं। पढ़ा रहे हैं। घर में बैठे2 भी बच्चों को राय मिलती है ऐसे2 चलो। अब बाप की श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बन जावेंगे। बच्चे जानते हैं कि हम उंच ते उंच बाप की मत पर उंच ते उंच वर्सा,मर्तबा पाते हैं। मनुष्य सृष्टि में उंच ते उंच यह है मर्तबा। इन उंच को नमस्ते करते हैं।मुख्य बात है ही पवित्रता की। मनुष्य तो मनुष्य ही है ;परंतु कहां तो वो ही विश्व का मालिक ,कहां फिर वही अब के मनुष्य। यह तुम्हारी बुद्धि में ही है कि भारत 5000वर्ष पहले ऐसा था। हम ही विश्व के मालिक थे। और किसी की बुद्धि में यह नहीं है। हम ही विश्व के मालिक थे। और किसकी बुद्धि में यह नहीं है। इनको भी पता थोड़े ही है। बिल्कुल घोर अंधेरे में है। अब बाप ने आकर बताया है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा कैसे होते हैं। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। और कोई समझ नहीं सकते हैं। सिवाय बाप के और कोई यह नालेज दे नहीं सकते हैं। निराकार बाप आकर पढ़ाते हैं। कृष्ण भगवानोवाच है। बाप ही कहते हैं तुमको पढ़कर सुखी बनाता हूँ। फिर मैं निर्वाणधाम में चला जाता हूँ।अब तुम बच्चे सतोप्रधान बन रहे हो।जो जितना पुरुषार्थ करेंगे इसमें खर्चे आदि की तो बात ही नहीं है। सिर्फ अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करना है।बिगर कौड़ी, खर्चे 21 जन्म के लिए तुम विश्व का मालिक बनते हो। कुछ भी खर्चा नहीं है। पाई–पैसा भी देते हैं सो भी अपना ही भविष्य बनाने के लिए। कल्प पहले जिसने जितना खजाने में डाला है वा`अब भी उतना ही डालेंगे। ना तो जास्ती ना ही कम डाल सकते हैं। यह बुद्धि में ज्ञान है इसलिए ही कोई हंसने की बात ही नहीं है। बिगर कोई भी .....के हम गुप्त राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह बुद्धि में स्मरण करना है। तुम बच्चों को कितना खुशी में रहना चाहिए। और फिर नष्टोमोहा भी बनना है।यहां नष्टोमोहा होने फिर तुम वहां मोहजीत राजा–रानी बन जाओगे।तुम जानते हो कि यह पुरानी दुनियां तो अब खतम होनी ही है। अब वापस जाना है तो फिर इसमें ममत्व ही क्यों रखें?कोई बीमार होतो है तो डॉक्टर कह देते है कि बहुत होपलेस केस है। फिर उनसे ममत्व निकल जाता है। समझते हैं कि आत्मा एक शरीर छोड़कर जाकर दूसरा लेती हैं आत्मा तो अविनाशी ही है ना। आत्मा चली गई फिर शरीर खतम हो गया। फिर उनकी आत्मा को बुलाते हैं। शरीर तो आ नहीं सकता है ; परंतु बुद्धि में याद शरीर ही आता है। अब तो वो भस्म हो गया है। फिर उनको याद करने से फायदा ही क्या होगा?अभी बाप कहते हैं कि तुम नष्टोमोहा बनो। अपने दिल से पूछना चाहिए हमारा कोई में मोह तो नहीं है। नहीं तो वो पिछाड़ी में याद जरूर आवेगा।नष्टोमोहा होंगे तो यह पद जरूर पावेंगे। स्वर्ग में तो सब आवेंगे। वो कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात तो है कि सजा ना खाकर पद पाना। योगबल से हिसाब–किताब चुक्तू करेंगे तो फिर सजायें नहीं खावेंगे।पुराने सम्बंध छी2 याद नहीं पड़ने चाहिए। अब तो हमारा ब्राह्मणों से नाता हैं।फिर तुम्हारा देवताओं से नाता होगा। अब का नाता सबसे उंचा है। अब तो ज्ञान के सागर बाप के बने हो।सारी नालेज बुद्धि में है। आगे थोड़े ही यह जानते थे कि सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। अब बाप ने समझाया है।बाप से वर्सा मिलता है तब तो बाप के साथ लव है ना। बाप द्वारा स्वर्ग की बादशाही मिलती है। इनका यह रथ मुकर्रर है।भारत में ही भागीरथ गाया हुआ है। बाप आते भी भारत में हैं।शिव के मंदिर

में बैल दिखाते हैं। उसका भी अर्थ नहीं समझते हैं। शिव और शंकर की सवारी दिखाते हैं।अब शिव मूलवतन में शंकर सूक्ष्मवतन का रहने वाला है। दोनों की ही बैल पर तो हो नहीं सकती है।वहां बैल कहां से आया?कृष्ण के मंदिर में कब भी बैल नहीं दिखाते हैं। शिव के मंदिर में ही रखते हैं वा कहां सवारी करते हैं।वो तो यहां आ नहीं सकते हैं।मनुष्य कहते हैं कि सर्वव्यापी है। नाम–रूप से न्यारे हैं।फिर वो बैल पर कैसे बैठेगा?कितना घोटाला है। इसको कहा ही जाता है भक्ति दुर्गति मार्ग।84जन्मों की सीढ़ी बुद्धि में बैठी है। तुम जान चुके हो कि यह 84का चक्र है। बहुत पूछते है कि 84के चक्र से छुट्टी नहीं हो सकती।बाप कहते हैं कि नहीं।सीढ़ी उतरने में समय लगता है। चढ़ने में सिर्फ यह अंतिम जन्म ही लगता है। इसलिए ही सेकेंड कहा जाता है।तुम त्रिलोकीनाथ त्रिकालदर्शी भी बनते हो। तुमको यह पता था कि हम त्रिलोकी नाथ बनने वाले हैं। अब बाप मिला है।.....शिक्षा देते हैं तब समझते हो। बाबा पास कोई आते हैं तो बाबा पूछते हैं आगे इसी ड्रेस में इसी मकान में कब मिले थे?कहते हैं हां बाबा,कल्प2 मिलते ही आते हैं।तो समझा जाता है कि ब्रह्माकुमारी ने ठीक समझाया हुआ है।अब तुम बच्चे स्वर्ग के (झाड़) सामने देखते हो।नजदीक हो ना। मनुष्य बाप के लिए कहते हैं िकनाम–रूप से न्यारा है।तो फिर बच्चे कहां से आवेंगे?वो भी नाम–रूप से न्यारे हो जावें।अक्षर जो भी कहते हैं बिल्कुल रांग।जिन्होंने कल्प पहले समझा होगा उनकी ही बुद्धि में बैठेगा। प्रदर्शनी में देखो कैसे2 आते हैं।कोई तो सुनी सुनाई बातों पर ही लग जाते हैं कि यह तो पाखण्ड है।तो समझा जाता है कि अपने कुल का नहीं है।अनेक प्रकार के मनुष्य हैं।तुम्हारी बुद्धि में सारा झाड़ ड्रामा सृष्टि चक्र का ज्ञान आ गया है। अब पुरुषार्थ करना है।वो भी ड्रामा अनुसार ही होता है। ड्रामा में नूंध है। ऐसे भी नहीं कि ड्रामा में पुरुषार्थ करना होगा तो होगा। यह कहना रांग है।ड्रामा को पूरा समझा नहीं है उनको ही फिर नास्तिक कहा जाता है। बाप से प्रीत रख नहीं सकते हैं।ड्रामा के राज को उल्टा समझने कारण गिर भी पड़ते हैं। फिर समझा जाता है कि इनकी तकदीर में ही नहीं है। विघ्न तो अनेक प्रकार के आवेंगे ही।उनकी परवाह नहीं करके बाप कहते हैं जो तुमको अच्छी2 बातें सिखाते हैं वो सुनो। बाप को याद करने से खुशी बहुत रहेगी। बुद्धि में है कि अब तो 84का चक्र पूरा होता है।अब जाते हैं अपने घर। ऐसे2 अपने साथ बातें करनी है। एक भी नहीं जा सकते हैं।साजन तो पहले2 चाहिए ना। पीछे बरात। गाया भी हुआ है भोलानाथ की बरात।भोलानाथ को पहले जाना पड़े।नम्बरवार ही जावेंगे नां सबको नम्बरवार ही जाना है। इतना झुण्ड कैसे नम्बरवार जाता होगा।मनुष्य पृथ्वी पर कितनी जगह लेता है। कितना फर्नीचर जागीरी आदि चाहिए। आत्मा तो बिंदी है।आत्मा को क्या चाहिए। कुछ भी नहीं। कितनी छोटी जगह लेती है। बुद्धि जानती है कि इस साकारी झाड़ में और निराकारी झाड़ में कितना फर्क है। वो है बिंदियों का झाड़। यह सब बातें बाप ही बुद्धि में बिठाते हैं। दुनियां में कोई सुन नहीं सकते हैं। तुमको अभी बाप घर और राजधानी याद दिलाते हैं। तुम बच्चे रचता को जानने से सृष्टि चक्र की आदि–मध्य–अंत को भी जान गये हो।तुम त्रिकालदर्शी आस्तिक हो।दुनियां भर में कोई भी आस्तिक नहीं है। वो है हद की पढ़ाई।यह है बेहद की पढ़ाई।वो है अनेक टीचर पढ़ाने वाले।यहां एक ही टीचर है पढ़ाने वाला।यहां फिर वंडर है कि यही बाप भी है तो टीचर भी है तो गुरू भी है सारे वर्ल्ड भर का ;परंतु सबको तो पढ़ना ही नहीं है ना। बाप को सब जाने तो बहुत भागे बापदादा को मिलने लिए।ग्रेट2 ग्रैंड फादर, एडम में बाप आया है।यह प्रख्यात तब ही होते हैं जब कि लड़ाई शुरू होती है। फिर कोई आ भी नहीं सकेंगे।तुम जानते हो कि इन अनेक धर्मों का विनाश भी होना है। पहले2 एक भारत ही था।और कोई खण्ड नहीं था। अब तुम्हारी बुद्धि में भले भक्तिमार्ग की भी बातें हैं। बुद्धि से कोई भूला थोड़े ही जाता है ;परंतु याद रहते हुये

भी समझना है कि हमको तो बाप को ही याद करना है।हमको तो अब घर वापस जाना है। तो खुशी होनी चाहिए ना। तुम बच्चों को समझाया है कि तुम्हारी अब वानप्रस्थ अवस्था हैं दो पैसे इस राजधानी स्थपन करने में लगाते हैं।वो भी अपना ही बनाते हैं कि हमको तो वहां मिले।वो भी जो भी करते हैं हूबहू कल्प पहले वाले ही हो।हम कल्प2 बाबा आपसे मिलते हैं।श्रीमत पर चल कर श्रेष्ठाचारी बनते हैं। यह बातें और कोई की भी बुद्धि में नहीं होगी।तुमको यह खुशी है कि हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं श्रीमत पर।बाप सिर्फ कहते हैं पवित्र बनो।तुम पवित्र बनेंगे तो सारी दुनियां पवित्र बनेगी।सब वापस चले जावेंगे।बाकी और बातों का तो हम फिकर ही क्यों करें?कैसे सजा खाते हैं,क्या होगा ,इसमें हमारा जाता ही क्या है?हमको तो अपना फिक्र करना है।और धर्मों की बातों में हम क्यों जावें?हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के हैं। रावण राज्य के कारण श्रेष्ठ धर्म, श्रेष्ठ कर्म को भूलकर भ्रष्ट कर्मों में लग गये हैं। हिंदू कह देते हैं।वास्तव में इनका नाम ही भारत है। इसका भी हिंदुस्तान नाम रख दिया है। हिंदू कोई धर्म नहीं है।हम लिखते हैं कि हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के हैं तो वो वहां हिंदू लगा देते हैं ; क्योंकि जानते नहीं हैं कि देवी—देवता धर्म कब था। कोई भी समझ नहीं है।अब इतने ब्र.कु.कु. हैं यह तो फैमिली हो गई ना। अरे, समाज को फैमिली थोड़े ही कहेंगे।यह तो फैमिली है।घर हो गया ना। ब्रह्मा तो है प्रजापिता।सबका ग्रेट2 ग्रैंड फादर।पहले2 तुम देवता बनते हो फिर वर्णों में आते हो।बाप कहते हैं यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। ज्ञान का सागर मैं हूँ।तुमको ज्ञान देकर मैं भी चला जाता हूँ।गीता में कितने गपोड़े लगा दिया है बेसमझी के।बाप के बदले कृष्ण का नाम दे दिया हैं गीता झूठी होने के कारण सब शास्त्र ही झूठे हो गये हैं।गीता मात—पिता है,शिवबाबा ना कि कृष्ण।बाबा द्वारा गीता के महावाक्य निकलते हैं। गीता शिवबाबा ने गाई है। इसलिए ही कृष्ण का चरित्र कोई है ही नहीं। यह सब है झूठ। बाप आकर सच्च खंड बनाते हैं। बाप को ही ट्रुथ कहा जाता है। सत्यनारायण की कथा कहते हैं ना। शिवबाबा सत्य नर से नारायण बनाने की नालेज देते हैं। एम ऑब्जेक्ट भी सामने ही है।बाकी तो सब है ही झूठ का संग। वहां पर तो एम ऑब्जेक्ट कुछ भी है ही नहीं। कॉलेज आदि में एम ऑब्जेक्ट होती है।तुम्हारा यह कॉलेज अथवा यूनिवर्सिटी है। हॉस्पिटल भी है। गाया भी जाता है ना ज्ञान अंजन सतगुरू।योगबल से तुम एवर हेल्दी और वेल्दी बनते हो। नेचरल क्योर कराते हैं ना।अब तुम्हारी आत्मा क्योर होने फिर शरीर भी क्योर हो जावेगा।यह है स्प्रिचुअल नेचर क्योर। हेल्थ वेल्थ हैप्पीनेस 21जन्मों लिए मिलता है। उपर में नाम लिख दो रुहानी नेचर क्योर। मनुष्यों को पवित्र बनाने की युक्तियां लिखने में हर्जा ही क्या है। आत्मा ही पतित बनी है तब तो बुलाती है ना। आत्मा पहले सतोप्रधान प्योर थी।फिर (तमोप्योर) बनी है। फिर अब प्योर कैसे बने?भगवानोवाच्य मनमनाभव। मुझे याद करो,पवित्र बनो तो मैं गारंटी करता हूँ कि तुम प्योर हो जावेंगे। बाबा कितनी युक्तियां बताते हैं। ऐसे2 बोर्ड लगा दो ;परंतु कोई ने भी ऐसा बोर्ड लगाया नहीं है।चित्र मुख्य रखे हुये हों ,अंदर जाकर बोलो तुम आत्मा परमधाम में रहने वाली है। यहां तो आर्गन्स मिले हैं पार्ट बजाने के लिए। यह शरीर तो विनाशी है ना। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे।अभी तुम्हारी आत्मा अपवित्र है। पवित्र बनो तो घर में वापस चले जावेंगे। समझाना तो बहुत ही सहज है। जो कल्प पहले वाले होंगे वो ही आकर फूल बनेंगे। इसमें डरने की कोई बात नहीं है। तुम तो अच्छी2 बातें लिखते हो ना। वो गुरू लोग भी मंत्र देते हैं ना तो बाप भी मंत्र देते हैं मनमनाभव। फिर रचता और रचना का राज समझाते हैं।गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ बाप को याद करो। दूसरे को भी परिचय दो। पायलेट .... लाइट हाउस बनो।